

Padma Shri



MS. TARA JAUHAR

Ms. Tara Jauhar, fondly known as Tara Didi, is a remarkable writer and educationalist who has dedicated her life to propagating the teachings of Shri Aurobindo.

2. Born on 5th July, 1936, Tara Didi grew up in the Pondicherry Ashram under the strong spiritual influence of The Mother and Sri Aurobindo. Her father, Shri Surendranath Jauhar, a freedom fighter, had sent her to Pondicherry when she was just 8 years old. She stayed there under The Mother's guidance till age 40. She has further enhanced her skills by managing and leading the Sri Aurobindo Ashram — Delhi Branch since the last 45 years.

3. Under Tara Didi's leadership and guidance, Sri Aurobindo Ashram has not only expanded in terms of activities but building a great community of spiritual seekers and leaders. She has compiled two books in English, namely "Growing Up with The Mother" and "Learning with The Mother" and two books in French "Reponses De La Mere A Une Monitrice" and "La Mere Travaille Avec Les Enfants". These books hold the treasures of her experiences and interaction with The Mother. One can see how she was shaped into a true divine worker by the Mother.

4. In 1981, Tara Didi initiated an esteemed project named Mirambika Free Progress School. She was instrumental in giving a practical manifestation to Integral Education & Free Progress System which was envisioned by The Mother. Under her guidance and support, more than 200 + rural schools across the country have been developed across India through various Educational workshops and materials in the areas of Integral Education, Mathematics experiential learning, Science Project based learning, Library and Books, Sports Equipment, etc.

5. Auro-Mira Vidya mandir is one of the most impactful educational projects initiated under Tara Didi's guidance and support in 2018. It is a co-educational residential, totally free school for tribal children, which runs 365 days in a year in remote Kechla, a tribal village in District Koraput, Odisha. Tara Didi has facilitated grants from the Ashram for many children across India, to sponsor their education in schools. In 1977, she initiated Youth camps to build courage and endurance in youth making them fearless with swabhimaan. Her all round sports training in Pondicherry helped her design and lead these camps in Nainital, an extension of Sri Aurobindo Ashram — Delhi Branch.

6. The vocational training for rural youth at Sri Aurobindo Ashram-Delhi Branch was initiated in 1989, where the youth are developed integrally with the objective to make them good disciplined human beings and become self-reliant (Atma Nirbhar). She has dedicated her entire life as a Divine Instrument to uplift, support and help the needy through her gift of compassion and service to the Mother.

पद्म श्री



सुश्री तारा जौहर

सुश्री तारा जौहर, जिन्हें प्यार से तारा दीदी के नाम से जाना जाता है, एक जानी मानी लेखिका और शिक्षाविद् हैं जिन्होंने श्री अरबिंदो की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

2. 5 जुलाई, 1936 को जन्मी, तारा दीदी पांडिचेरी आश्रम में माता और श्री अरबिंदो के प्रबल आध्यात्मिक प्रभाव में पली-बढ़ीं। इनके पिता, श्री सुरेंद्रनाथ जौहर, स्वतंत्रता सेनानी ने महज 8 साल की उम्र में उन्हें पांडिचेरी भेज दिया था। ये वहां 40 वर्ष की आयु तक माता के मार्गदर्शन में रहीं। इन्होंने पिछले 45 वर्षों से श्री अरबिंदो आश्रम – दिल्ली शाखा का प्रबंधन और नेतृत्व करके अपने कौशल को और बढ़ाया है।

3. तारा दीदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में, श्री अरबिंदो आश्रम ने न केवल अपने कार्यकलापों का विस्तार किया है बल्कि आध्यात्मिक साधकों और नेताओं के एक महान समुदाय का निर्माण किया है। इन्होंने अंग्रेजी में दो पुस्तकों, जिनका नाम है: "ग्रोइंग अप विद द मदर" और "लर्निंग विद द मदर" और फ्रेंच में दो पुस्तकों "रेपोंसेस डे ला मेरे ए उने मोनिट्राइस "और" ला मेरे ट्रेवेल एवेक लेस एनफैंट्स "का संकलन किया है। इन पुस्तकों में इनके अनुभवों और माता के साथ बातचीत का खजाना भरा पड़ा है। यह देखा जा सकता है कि कैसे इन्हें माँ द्वारा एक सच्चे दिव्य कार्यकर्ता के रूप में आकार दिया गया था।

4. वर्ष 1981 में, तारा दीदी ने मिरांबिका फ्री प्रोग्रेस स्कूल नाम से एक सम्मानित परियोजना शुरू की। ये एकात्म शिक्षा और मुक्त प्रगति प्रणाली को एक व्यावहारिक अभिव्यक्ति देने में सहायक थी जिसकी कल्पना माँ ने की थी। इनके मार्गदर्शन और सहायता के तहत, पूरे भारत में 200 से अधिक ग्रामीण स्कूलों को एकीकृत शिक्षा, गणित अनुभवात्मक शिक्षा, विज्ञान परियोजना आधारित शिक्षा, पुस्तकालय और किताबें, खेल उपकरण, आदि के क्षेत्रों में विभिन्न शैक्षिक कार्यशालाओं और सामग्रियों के माध्यम से विकसित किया गया है।

5. ऑरो-मीरा विद्या मंदिर, 2018 में तारा दीदी के मार्गदर्शन और सहायता के तहत शुरू की गई सबसे प्रभावशाली शैक्षिक परियोजनाओं में से एक है। यह आदिवासी बच्चों के लिए एक सह-शैक्षिक आवासीय, पूरी तरह से निः शुल्क स्कूल है, जो ओडिशा के कोरापुट जिले के एक दूरस्थ आदिवासी गांव केचला में साल में 365 दिन चलता है। तारा दीदी ने स्कूलों में उनकी शिक्षा को प्रायोजित करने के लिए, पूरे भारत में कई बच्चों के लिए आश्रम से अनुदान की सुविधा प्रदान की है। वर्ष 1977 में, इन्होंने स्वाभिमान के साथ युवाओं में साहस और सहनशक्ति बनाने के लिए युवा शिविरों की शुरुआत की। पांडिचेरी में इनके सर्वांगीण खेल प्रशिक्षण ने इन्हें श्री अरबिंदो आश्रम-दिल्ली शाखा के विस्तार, नैनीताल में इन शिविरों के डिजाइन और नेतृत्व में मदद की।

6. श्री अरबिंदो आश्रम-दिल्ली शाखा में ग्रामीण युवाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण 1989 में शुरू किया गया था, जहां युवाओं को एक अच्छा अनुशासित इंसान बनाने और आत्मनिर्भर बनने के उद्देश्य से एकीकृत रूप से विकसित किया जाता है। इन्होंने अपना पूरा जीवन माता के प्रति दया और सेवा के उपहार के माध्यम से जरूरतमंदों के उत्थान, समर्थन और मदद के लिए एक दिव्य साधन के रूप में समर्पित किया है।